टिप्पणी

223hi12

12

प्रस्तुति कलाएँ – संगीत, नृत्य तथा नाटक

हमारे देश में संगीत, नृत्य, नाटक, लोकमंच या कठपुतली आदि प्रस्तुति कलाओं की भरमार है। ओह! कोई ढोल (संगीत वाद्य) बजा रहा है। वहाँ संगीत बज रहा है। हम वहाँ जाकर देखते हैं कि वहाँ क्या हो रहा है? वाह! यह तो लोहड़ी पर्व है जो हमारे देश के उत्तर भाग में प्रति वर्ष 13 जनवरी को मनाया जाता है। लोग बहुत हर्षोल्लास के साथ गा और नाच रहे हैं। ये पंजाब में भांगड़ा तथा गिद्धा नृत्य कहे जाते हैं। ये गीत तथा नृत्य हमारे जीवन के विभिन्न पक्षों को दर्शाते हैं। ये पहले ग्रामीण लोगों के सामाजिक-धार्मिक रिवाजों तथा प्रथाओं को ही प्रतिबिम्बत करते थे परन्तु अब ये सब आधुनिक शहर की भी संस्कृति का प्रमुख भाग बन गए हैं। कोई भी विद्यालय का कार्यक्रम इनके बिना पूरा नहीं होता। यहाँ उत्सव मनाने के इतने कारण हैं कि उनकी सूची बनाना भी कठिन है, आप भी क्यों न इन क्रियाकलापों की सूची बना लें और जानें कि इन्हें क्यों और कब मनाते हैं? आपको ये क्रियाएँ न केवल मनोरंजनक लगेंगी बल्कि आप इस सूची को समाप्त भी नहीं कर सकोगे। आप जानते हैं क्यों? क्योंकि हमारे देश में इनकी इतनी प्रचुरता है कि आप समूचे नृत्य, संगीत और नाटकों की मात्रा को कभी जान भी नहीं पाओगे।

भारत समृद्ध संस्कृति तथा विरासत से सम्पन्न देश है। हमारी सभ्यता के आरंभ से ही संगीत, नृत्य, नाटक हमारी संस्कृति के अभिन्न अंग रहे हैं और प्रारंभिक दौर में ये कला के अंग धर्म और समाज सुधार आन्दोलनों को प्रसारित करने का माध्यम थे जिनको लोकप्रिय बनाने के लिए संगीत और नृत्य को समाविष्ट किया गया था। वैदिककाल से मध्ययुगीन काल तक प्रस्तुतिकलाएँ जनसामान्य को शिक्षित करने का महत्त्वपूर्ण माध्यम बनी हुई थीं। वैदिक मन्त्रों को लय में तथा त्रुटिहीन गाने के लिए वेदों में नियम बताए गए थे?

विभिन्न मंत्रों को सुर तथा स्वराघात में उच्चारण को शुद्ध करके गाने की विधि भी वर्णित है। इनके माध्यम से शिक्षा और सामाजिक सुधार की अपेक्षा अनुकरणीय उच्चारण पर भी

अधिक बल दिया गया है। वर्तमान काल में ये कलाविधाएं समस्त संसार में सामान्य लोगों के लिए मनोरंजन का साधन बन गई हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:–

- कई चरणों को पार करती हुई प्रस्तुति कलाओं के विकास क्रम के लक्ष्य व उद्देश्यों की विवेचना कर सकेंगे;
- प्राचीन काल और मध्यकाल में प्रस्तुति कलाओं के उपयोग का वर्णन कर सकेंगे;
- संगीत के क्षेत्र में सूफी और भक्ति काल के संतों के योगदान को पहचान सकेंगे;
- हिन्दुस्तानी शास्त्रीय-संगीत और कर्नाटक-संगीत के अन्तर को समझ सकेंगे;
- भारतीय संस्कृति में शास्त्रीय नृत्य, लोक संगीत एवं साथ ही साथ लोक नृत्यों के योगदान को पहचान सकेंगे;
- भारत में कई चरणों में हुए नाटकों के विकास का विश्लेषण कर सकेंगे तथा इस क्षेत्र में लोक नाटकों के योगदान को पहचान सकेंगे;
- मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में कला के तीन प्रकारों की भूमिका की जांच कर सकेंगे; तथा
- संगीत, नृत्य तथा नाटक के वर्तमान परिदृश्य का विश्लेषण कर सकेंगे।

12.1 प्रस्तुति कलाओं की अवधारणा

कला क्या है? मानव मस्तिष्क की सौन्दर्य विषयक विशेषताओं को प्रकट करना 'कला' है। ये विशेषताएँ अर्थात् विभिन्न मानवीय भावनाएं 'रस' मानी जाती हैं। हिन्दी भाषा में रस का शाब्दिक अर्थ है मीठा रस। यह 'आनन्द' की अंतिम-संतुष्टि को बताता है। मानव की भावनाओं को 'नवरस' नामक उपशीर्षकों के अंतर्गत विभाजित कर सकते हैं।

1. हास्य ..... हंसी
2. भयानक ..... डरावना दृश्य
3. रौद्र ..... वीरता तथा दया (सामन्ती व्यवहार)
4. करुण ..... दया पूर्ण
5. वीर ..... साहस
6. अद्भुत ..... आश्चर्यजनक

टिप्पणी

7. वीभत्स ..... घृणित, डरावना

8. शान्त ..... शान्ति

9. श्रृंगार ..... प्रेम रस

कला मानव की भावनाओं को स्वाभाविक रूप से प्रकट करती है; मनुष्य अपने मन के विचारों को स्वाभाविक रूप से विभिन्न कलात्मक रूपों में प्रकट करते हैं। इस प्रकार बुद्धिमान मानव का कलात्मक झुकाव कला को जन्म देता है। वह अपनी भावना को गायन, नृत्य, रेखा चित्र, चित्रकला, अभिनय तथा मूर्तिकला के माध्यम से व्यक्त करता है। कुछ अपनी भावना को जीवन्त प्रस्तुति तथा अन्य दृश्य कला के माध्यम से प्रकट करते हैं। रेखाचित्र बनाना, चित्रकारी, मूर्तिकला दृश्य कलाएँ हैं। गायन, नृत्य, अभिनय प्रस्तुति कला की सहज विशेषताएँ हैं। भारत की सबसे प्राचीन लोकप्रिय कला संगीत कला रही है।

भारतीय संगीत की सबसे प्राचीन परंपरा को हम सामवेद में खोज सकते हैं, जिसके मन्त्र संगीत बद्ध रूप में गाये जाते हैं। आज भी धार्मिक अनुष्ठानों में वैदिक मंत्रों का एक खास स्वर और स्वाराघात में उच्चारण किया जाता है। सबसे प्राचीन पुस्तक, जिसमें प्रस्तुति कलाओं का वर्णन और चर्चा विशिष्ट रूप में की गई है, वह है, भरतमुनि का 'नाट्यशास्त्र' जो ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी और ईसा पश्चात् दूसरी शताब्दी के बीच संकलित किया गया था। इसमें संगीत पर छः अध्याय हैं। दूसरी महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, मातंग की 'बृहद्देशी' जिसे आठवीं और नवीं शताब्दी के बीच लिखा गया था। इस पुस्तक में 'रागों' का पहली बार नामकरण एवं उन पर विस्तृत रूप से चर्चा की गई है। सारंगदेव ने 13वीं शताब्दी में 'संगीत-रत्नाकर' लिखा, जिसमें 264 रागों का वर्णन किया गया है। तार और वायु वाद्ययत्रों के कई प्रकारों की खोज बाद के समय में हुई। प्राचीन पुस्तकों में बांसुरी, ढोल, वीणा, तारों के वाद्ययंत्र, मंजीरा आदि वाद्ययन्त्रों की चर्चा है। बहुत सारे शासकों जैसे समुद्रगुप्त, धारा के राजा भोज और कल्याण के राजा सोमेश्वर ने भी संगीत को संरक्षण दिया था। गुप्त सम्राट समुद्र गुप्त स्वयं कुशल संगीतकार थे। कुछ सिक्कों में वे स्वयं वीणा बजाते हुए दिखाए गए हैं। मंदिरों में देवी एवं देवताओं की पूजा करते हुए संगीत का प्रयोग होता है। 12वीं शताब्दी में उड़ीसा के जयदेव ने 'गीत-गोविंद'' जैसे उत्कृष्ट रागकाव्य की रचना की जिसका प्रत्येक गीत रागों पर आधारित था। ''गीत-गोविंद राधा और कृष्ण के प्रेम-प्रसंगों पर रचित काव्य है। अभिनवगुप्त (सन् 993-1055 ई.) द्वारा रचित 'अभिनवभारती' ग्रन्थ संगीत के बारे में उपयोगी जानकारी प्रदान करता है। तमिल संगीत की बहुत सारी शब्दावलियां और धारणाएं संस्कृत शास्त्रों के समानांतर हैं। शैववादी 'नयनार' और वैष्णववादी 'अलवारों' ने अपनी कविताओं की रचना संगीत के आधार पर की।

इसी प्रकार मध्यकाल में सूफी और भक्ति संतों ने संगीत को बढ़ावा दिया। सूफी खानकाहों में कव्वालियां गाई जाती थीं, वहीं भक्ति संतों के कारण भक्ति संगीत जैसे कीर्तन और भजन आदि लोकप्रिय हुए। कबीर, मीराबाई, सूरदास, चंडीदास, तुलसीदास, विद्यापति आदि नाम भक्ति संगीत से जुड़े हैं। अमीर खुसरो जैसे महान विद्वानों ने भी संगीत के विकास में योगदान किया। मालवा के प्रसिद्ध शासक बाजबहादुर और उनकी पत्नी रानी रूपमती ने नए

टिप्पणी

रागों की रचना की। इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय द्वारा 17वीं शताब्दी में 'किताबे नवरस' लिखा गया था, जो मुस्लिम संतों और हिन्दू देवी-देवताओं की प्रशंसा में लिखे गए कविताओं का संग्रह है। तानसेन, अकबर के राजदरबार के सबसे प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। जिनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता था यद्यपि दरबार में अनेक कवि थे। बैजू बावरा, अकबर के काल में ही एक और प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। प्राचीन और मध्यकालीन शासकों द्वारा संगीत को दिये गये संरक्षण ने, भक्ति परंपरा को जीवित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। वास्तव में मुगल शासक संगीत के संरक्षक थे। 'लेनपूले' के अनुसार–बाबर भी स्वयं संगीत का शौकीन था। उन्होंने 'कव्वाली' 'ख्याल' आदि संगीत विधाओं को विकसित किया। हुमायूँ ने संगीत विषयक भारतीय ग्रंथों के उदाहरण प्रस्तुत किए। अकबर ने गीतों को रागात्मक रूप में बांधा और संगीतकारों को प्रोत्साहित किया। स्वामी हरिदास तथा उनके शिष्यों ने अनेक गीतों को विभिन्न धुनों में बाँधा। पुण्डरीक विट्ठल संगीत के बड़े विद्वान थे। उन्होंने प्रसिद्ध 'रागमाला' लिखी। मीराबाई, तुलसीदास और सूरदास ने अपने भक्तिपूर्ण गीतों को गाकर हिन्दुस्तानी संगीत को समृद्ध किया।

पाठगत प्रश्न 12.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. प्रस्तुति कलाओं के कितने विभिन्न रूप हैं?

   .....

2. मनोरंजन और मन बहलाने के अतिरिक्त प्रस्तुति कला के अन्य क्या प्रभाव हैं?

   .....

3. पूरी तरह प्रस्तुति कलाओं को समर्पित प्राचीनतम ग्रन्थ कौनसा है?

   .....

4. आठवीं तथा नौवीं शताब्दी के मध्य प्रस्तुति कलाओं के विषय में रचित ग्रन्थ का नाम लिखें।

   .....

5. हमें किस पुस्तक में पहली बार रागों के नाम मिलते हैं? जिसमें उनकी विस्तार पूर्वक चर्चा है।

   .....

6. 'संगीतरत्नाकर' में कितने रागों को बताया गया है?

   .....

टिप्पणी

7. जयदेव की 'गीतगोविंद' का क्या विषय है?

.....

8. तमिल के जिस दो कवियों ने अपनी कविताओं को संगीत में निबद्ध किया, उनके नाम लिखें।

.....

9. किसने किताबे-नवरस लिखी?

.....

10. मालवा के शासक वाजबहादुर तथा उनकी पत्नी रूपमती का संगीत में क्या योगदान था?

.....

12.2 भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रकार

मध्यकाल में भारतीय शास्त्रीय संगीत मुख्य रूप से दो परंपराओं में विभाजित था–पहला, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत जो उत्तर भारत में लोकप्रिय था एवं दूसरा, कर्नाटक संगीत, जो दक्षिण भारत में प्रसिद्ध था।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति का काल दिल्ली सल्तनत और अमीर खुसरो (सन् 1233 ई.-1325 ई.) तक का माना जा सकता है। अमीर खुसरों ने एक विशेष तरीके से संगीत की वाद्ययन्त्रों सहित प्रस्तुति की कला को बढ़ावा दिया। ऐसा विश्वास किया जाता है कि उन्होंने ही सितार और तबला का आविष्कार किया था और नए रागों की भी रचना की थी। हिन्दुस्तानी संगीत के ज्यादातर संगीतज्ञ स्वयं को तानसेन की परंपरा का वाहक मानते हैं। ध्रुपद, ठुमरी, ख्याल, टप्पा आदि शास्त्रीय संगीत की अलग-अलग विधाएँ हैं। ऐसा कहा जाता है कि तानसेन के संगीत में जादू का सा प्रभाव था। वे यमुना नदी की उठती हुई लहरों को रोक सकते थे और 'मेघ मल्हार' राग की शक्ति से वर्षा करवा सकते थे। वास्तव में आज भी भारत के सभी भागों में उनके सुरीले गीत रुचिपूर्वक गाये जाते हैं। अकबर के दरबार में बैजूबावरा, सूरदास आदि जैसे संगीतकारों को संरक्षण दिया गया था।

कुछ अत्यंत लोकप्रिय राग हैं–बहार, भैरवी, सिंधु भैरवी, भीम पलासी, दरबारी, देश, हंसध्वनि, जय जयंती, मेघमल्हार, तोड़ी, यमन पीलू, श्यामकल्याण, खम्बाज आदि।

भारत में वाद्य संगीत की बहुत विधाएँ हैं। इनमें सितार, सरोद, सन्तूर, सारंगी जैसे प्रसिद्ध वाद्य हैं। पखावज, तबला, और मृंदगम ताल देने वाले वाद्य हैं। इसी प्रकार बांसुरी, शहनाई और नादस्वरम् आदि मुख्य वायु वाद्य हैं।

टिप्पणी

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय-संगीत के संगीतज्ञ सामान्यत: एक घराने या एक विशिष्ट संगीत विधा से संबंधित होते हैं। 'घराना' संगीतज्ञों की वंशानुगत संबद्धता से जुड़ा हुआ शब्द है, जो किसी खास संगीत विधा के सारभाग को सूचित करता है तथा अन्य रागों से विभिन्नता प्रदर्शित करता है। घराना, गुरु-शिष्य परंपरा से निर्धारित होते हैं, अर्थात् एक विशेष गुरु से संगीत की शिक्षा प्राप्त शिष्य समान घराने के कहलाते हैं। ग्वालियर घराना, किरण घराना, जयपुर घराना आदि जाने माने घराने हैं।

कीर्तन, भजन, राग जैसे भक्तिपूर्ण संगीत 'आदिग्रंथ' में समाहित हैं। मौहर्रम के दौरान मजलिस में गायकी का भारतीय संगीत में विशेष स्थान है। इसके साथ-साथ लोक-संगीत भी सांस्कृतिक विरासत की सम्पन्नता को दिखाता है।

12.3 कर्नाटक संगीत

कर्नाटक संगीत की रचना का श्रेय सामूहिक रूप से तीन संगीतज्ञों श्याम शास्त्री, थ्यागराजा और मुत्थुस्वामी दीक्षितर को दिया जाता है, जो 1700 ई. से 1850 ई. के बीच के काल के थे। पुरंदरदास, कर्नाटक संगीत के एक दूसरे महत्त्वपूर्ण रचनाकार थे। थ्यागराजा का सम्मान एक महान कलाकार और संत दोनों रूपों में किया जाता है। वे कर्नाटक संगीत के साक्षात् मूर्त्त प्रतीक हैं। उनकी मुख्य रचनाओं को ''कृति'' के रूप में जाना जाता है, जो भक्ति प्रकृति की है। तीन महान संगीतज्ञों ने नए तरीकों का प्रयोग किया। महावैद्यनाथ अय्यर (सन् 1844-93), पतनम सुब्रह्मण्यम आयंगर (सन् 1854-1902 ई.), रामनद श्रीनिवास आयंगर (सन् 1860-1919 ई.) आदि कर्नाटक संगीत के अन्य महत्त्वपूर्ण संगीतज्ञ हैं। बांसुरी, वीणा, नादस्वरम्, मृदगम्, घटम् कर्नाटक संगीत में प्रयुक्त मुख्य वाद्ययंत्र हैं।

हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत में कुछ असमानताओं के बावजूद उनमें कुछ समान विशेषताएं मौजूद है, जैसे कर्नाटक संगीत का 'आलपन' हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के 'आलाप' के समान है। कर्नाटक संगीत में व्यवहृत 'तिलाना' हिन्दुस्तानी संगीत के 'तराना' से मिलता जुलता है। दोनों संगीत विधाएं 'ताल' या तालम् पर जोर देते हैं।

12.4 आधुनिक भारतीय संगीत

अंग्रेजी शासन के साथ पश्चिमी संगीत भी हमारे देश में आया। भारतीय संगीत की मांग को संतुष्ट करने के लिए भारतीयों ने वायलिन और शहनाई वाद्ययंत्रों को अपनाया। मंच पर संगीत का वृन्दवादन एक नया विकास है। कैसेटों के उपयोग ने धुनों और रागों के मौखिक प्रदर्शन को प्रतिस्थापित कर दिया है। संगीत, जो कुछ सुविधा-सम्पन्न धनी लोग के बीच ही सीमित था, अब व्यापक जनता को उपलब्ध है। देश में मंचीय प्रदर्शनों के द्वारा हजारों संगीत प्रेमी आनंद उठा सकते हैं। संगीत की शिक्षा अब गुरु-शिष्य व्यवस्था पर ही निर्भर नहीं है, अब इसकी शिक्षा संगीत सिखाने वाले संस्थानों में भी दी जाती है।

टिप्पणी

संगीतज्ञ

अमीर खुसरो, सदारंग अदरंग, मियां तानसेन, गोपाल नायक, स्वामी हरिदास, पंडित वी. डी. पलुस्कर, पंडित वी.एन. भातखंड़े, थ्यागराजा, मुत्थुस्वामी दीक्षितर, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर, पंडित विनायक राव पटवर्द्धन, उस्ताद चांद खान, उस्ताद बड़े गुलाम अली खान, उस्ताद फैयाज खान, उस्ताद निसार खान, उस्ताद अमीर खान, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित कुमार गंधर्व, केसरबाई केरकर तथा श्रीमती गंगूबाई हंगल आदि प्रमुख संगीत गायक हैं।

वादकों में बाबा अलाउद्दीन खान, पंडित रविशंकर, उस्ताद बिस्मिल्ला खान, उस्ताद अल्लाहरखा खान, उस्ताद जाकिर हुसैन प्रमुख संगीतज्ञ हैं।

12.5 लोक संगीत

शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त भारत के पास लोक संगीत या लोकप्रिय संगीत की एक समृद्ध विरासत है। यह संगीत जनभावनाओं को प्रस्तुत करता है। साधारण गीत, जीवन के प्रत्येक घटनाओं को चाहे वह कोई पर्व हो, नई ऋतु का आगमन हो, विवाह या किसी बच्चे के जन्म का अवसर हो, ऐसे उत्सव मनाने के लिए रचे जाते हैं। राजस्थानी लोकसंगीत जैसे मांड़, भाटियाली और बंगाल की भटियाली पूरे देश में लोकप्रिय है। रागिनी हरियाणा का प्रसिद्ध लोक गीत है।

लोक गीतों का एक खास अर्थ तथा संदेश होता है। वे अक्सर ऐतिहासिक घटनाओं और महत्त्वपूर्ण अनुष्ठानों का वर्णन करते हैं। कश्मीरी 'गुलराज' सामान्यत: एक लोक कथा है। मध्य प्रदेश का 'पंड्याणी' भी एक कथा है, जिसे संगीतबद्ध कर प्रस्तुत किया जाता है। मुस्लिम मुहर्रम के अवसर पर सोजख्वानी या शोकगीत गाते हैं। ईसाइयों के त्यौहरों के अवसर पर कैरोल और आनंद गीत, समूह में गाए जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 12.2

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो भाग कौन से हैं?

   .....

2. हिन्दुस्तानी संगीत की विभिन्न शैलियां क्या हैं?

   .....

3. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में 'घराना' क्या है?

   .....

4. भारत के कुछ प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी संगीत घरानों के नाम बतायें।

   .....

टिप्पणी

5. कर्नाटक संगीत में 'कृति' क्या है?

.....

6. भारत के कर्नाटक संगीत के कुछ संगीत रचनाकारों के नाम बतायें।

.....

7. कर्नाटक संगीत में कौन से सहायक मुख्य वाद्य यन्त्र प्रयोग किए जाते हैं?

.....

8. हिन्दुस्तानी संगीत तथा कर्नाटक संगीत दोनों में समान दो लक्षण कौन से हैं?

.....

12.6 भारत के नृत्य

ऋग्वेद में 'नृति' तथा नृतु का उल्लेख मिलता है तथा उषा काल की सुन्दरता की तुलना सुन्दर बेशभूषायुक्त नृत्यांगना से की है। जैमिनी तथा कौशीतकी ब्राह्मण ग्रन्थों में नृत्य और संगीत का एक साथ उल्लेख किया गया है। महाकाव्यों में स्वर्ग तथा पृथ्वी पर नृत्य के अनेक उदाहरण मिलते हैं।

संगीत के समान भारतीय नृत्य की भी समृद्ध शास्त्रीय परंपरा विकसित हो चुकी थी। कथा कहते हुए, नृत्य, भावनाओं को व्यक्त करने का सशक्त साधन है।

भारत में नृत्य कलाओं के इतिहास का प्रारम्भ हडप्पा संस्कृति में खोजा जा सकता है। हड़प्पा में मिली नृत्यांगना की एक कांस्य मूर्ति का साक्ष्य इस बात को साबित करता है कि वहां स्त्रियों द्वारा नृत्य का प्रदर्शन होता था।

भारतीय परम्परागत संस्कृति में नृत्यों के द्वारा धार्मिक विचारों को सांकेतिक अभिव्यक्ति दी जाती थी। नटराज के रूप में शिव की मुद्रा, सृष्टि चक्र के निर्माण व ध्वंस को दर्शाती है। नटराज के रूप में शिव की लोकप्रिय प्रतिमा भारतीय जन मानस पर नृत्य के प्रभाव को दर्शाती है। देश के विशेष रूप से दक्षिणी भाग में कोई भी ऐसा मंदिर नहीं है जहां नृत्य करते देवों की विभिन्न मुद्राओं वाली मूर्ति न हो। कत्थकली, मणिपुरी, भरतनाट्यम्, कत्थक, कुचीपुड़ी तथा ओडिसी कुछ भारतीय शास्त्रीय नृत्यों के प्रकार हैं जो हमारी सांस्कृतिक विरासत का आवश्यक अंग है।

यह कहना कठिन है कि नृत्य का किस समय पर आविर्भाव हुआ परन्तु यह स्पष्ट है कि खुशी को व्यक्त करने के लिए नृत्य अस्तित्व में आया। धीरे-धीरे नृत्य को लोक तथा शास्त्रीय दो भागों में बांटा गया। शास्त्रीय नृत्य को मंदिरों तथा शाही राजदरबारों में प्रस्तुत किया जाता था। मंदिरों में नृत्य धार्मिक उद्देश्य से किये जाते थे जबकि राज दरबार में यह केवल मनोरंजन का साधन मात्र था। दोनों ही अवसरों पर दक्षिण भारत में भरतनाट्यम्

टिप्पणी

व मोहिनीअट्टम् मंदिरों में धार्मिक अनुष्ठानों के एक महत्त्वपूर्ण पहलू के रूप में विकसित हुए। यक्षगान, जो कि, केरल के कथकली नृत्य का एक प्रकार है, इस कला में पारंगत नर्तकों के लिए यह ईश्वर की पूजा से कम न था। रामायण व महाभारत की कथाओं की नृत्य-प्रस्तुति की जाती है जबकि कत्थक व मणिपुरी अधिकाशंतः भगवान कृष्ण की कथाओं एवं उनके रास नृत्य से संबद्ध होते हैं। ओडिसी नृत्य भगवान जगन्नाथ की पूजा से संबंधित है। उत्तर भारत में कत्थक को विशेष रूप से मंदिरों में कृष्ण लीला और भगवान शिव की कथाओं को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है, लेकिन साथ ही साथ इस नृत्य को मध्यकाल में राजदरबारों में भी प्रस्तुत किया जाने लगा। राजा के दरबार में प्रेम भावना युक्त ठुमरी और गजल वाद्ययन्त्रों सहित प्रस्तुत किये जाते थे, जो मनोरंजन पक्ष को प्रतिबिंबित करते थे। मणिपुरी नृत्य भी धार्मिक प्रयोजनों के लिए ही प्रस्तुत किया जाता था। लोक नृत्य आम लोगों के जीवन से विकसित हुए जिन्हें समूह में प्रस्तुत किया जाता था। असम में फसलों की कटाई के समय के आगमन को बीहू नृत्य के माध्यम से उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसी प्रकार गुजरात का गरबा, पंजाब का गिद्धा और भांगड़ा, मिजोरम का बांस नृत्य, महाराष्ट्र में मछुआरों का कोली नृत्य; कश्मीर का धूमल, बंगाल का छाऊ नृत्य आदि प्रस्तुति कलाओं के माध्यम से आम लोगों के द्वारा अपने हर्ष और शोक को अभिव्यक्त करने के अनूठे उदाहरण हैं।

जहां तक इस नृत्य के विश्लेषणात्मक अध्ययन का प्रश्न है, भरत मुनि का नाट्य शास्त्र इस संदर्भ का प्राथमिक स्रोत है। मूलतः नाट्यशास्त्र, नाट्य कला से संबंधित है परंतु नाटक के अभिन्न अंश के रूप में भरत मुनि ने नृत्य व उसके अनेक अंगों की विस्तृत चर्चा की है। मुखाकृति, शारीरिक भाव भंगिमाएं, हस्तमुद्रा तथा पद संचालन सभी को तीन भागों में विभाजित करते हुए उन्हें 'नृत्त' (पद संचालन), नृत्य (अंग संचालन) तथा नाट्य (अभिनय) की संज्ञा दी गई है। प्रारंभ में पुरुषों और महिलाओं दोनों ने नृत्य में विशेष रुचि ली थी, परन्तु एक ऐसा समय भी आया जब समाज महिला नर्तकी को हेय दृष्टि से देखने लगा। अब एक बार फिर ये सब चीजें बदल गई हैं। महान संगीतविदों के प्रयत्नों और धार्मिक व सामाजिक सुधार आंदोलनों के फलस्वरूप लोग अब महिला कलाकारों को सम्मान की नजरों से देखने लगे हैं।

मध्ययुगीन काल में मुगल शासकों ने कत्थक नृत्य को प्रोत्साहन दिया। सुना जाता है कि मुगल शासकों में 'औरंगजेब' को छोड़कर ये नृत्य प्रस्तुतियाँ दरबार में पेश की जाती थीं। दक्षिणी भारत में, मंदिर, दरबार तथा भवनों में नर्तकों के लिए विशेष मंच प्रदान किया जाता था। नव रस, राम, कृष्ण, गणेश, दुर्गा आदि की पौराणिक कथाओं को नृत्य के द्वारा अभिनीत किया जाता था। उत्तर भारत के कुछ शासक जैसे वाजिद अली शाह संगीत और नृत्य के बड़े संरक्षक थे। लखनऊ घराना या नृत्य की पाठशाला के बीज यहीं बोये गए। यहीं लखनऊ घराना शुरु हुआ। आधुनिक समय में पंडित बिरजु महाराज लखनऊ घराना के ही नर्तक हैं। मध्ययुगीन काल में, प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों के नृत्य के कठोर नियमों को दक्षिण नृत्य शैली ने आत्मसात कर लिया था। दक्षिणी राज्य नृत्य की शिक्षा के प्रमुख केन्द्र बन गये तथा दक्षिण में अनेक नृत्य संस्थान खुलते चले गये।

आधुनिक काल में हमें दक्षिण भारतीय शास्त्रीय नृत्य धारा में अधिकतम नृत्य रूप प्राप्त होते हैं। कुचीपुड़ी भरतनाट्यम्, मोहिनीयअट्टयम्, कथकली तथा पूर्व दिशा में ओडिशी नृत्य विकसित हो रहा था।

शास्त्रीय नृत्य शैली के साथ लोकनृत्य भी विकसित हो रहा था। अनेक राज्यों में स्थानीय नृत्य भी लोकप्रिय हो गये। मणिपुरी नृत्य, संथालनृत्य रवीन्द्रनाथ की नृत्य नाटिकाएँ, छाऊ, रास, गिद्दा, भांगड़ा, गरबा आदि कुछ लोकनृत्य भारत में प्रचलित हो रहे थे। वे समान रूप से लोकप्रिय हैं तथा नवीन कुशाग्रता और गवेषणाओं से संप्रेरित हैं।

हमारे देश के प्रायः सभी राज्यों ने अपने लोकनृत्यों की समृद्ध परंपरा विकसित कर ली है। उदाहरण के लिए आसाम का बिहु, लद्दाख का मुखौटा नृत्य, मेघालय का वांगला, सिक्किम का भूतिया या लेप्चा नृत्य। इसके साथ ही कुछ मार्शल डांस हैं जैसे उत्तराचंल का छोलीया, केरल का कलारी पैट्टु, मणिपुर का थांग-ता आदि प्रसिद्ध नृत्य हैं।

वर्तमान में देश में तीनों ही कलाएं विकसित हो रही हैं। संगीत के संस्थान खुलने से अनेक लोगों को संगीत सीखने का अवसर मिल रहा है। विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में संगीत विभाग खुल गए हैं। खैरगढ़ का इंदिरा कला विश्वविद्यालय संगीत का विश्वविद्यालय है। गन्धर्व महाविद्यालय, कत्थक केन्द्र तथा दक्षिण के कई संस्थान संगीत का अपने तरीके से प्रसार कर रहे हैं।

संगीत सभाएं, बैठकें, भाषण, प्रदर्शन आदि देश के कोने-कोने में संगीत का प्रसार कर रहे हैं, सामाजिक संस्थाएँ जैसे स्पिक-मैके, भारतीय अन्तर्देशीय ग्रामीण सांस्कृतिक केन्द्र (IIRCC) कलाकारों तथा आधुनिक पीढ़ी के बीच गहरे संबंध स्थापित करने में बहुत परिश्रम से कार्य कर रहे हैं।

विदेशों में भी संगीतकार सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। पंडित रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खान, अल्लारक्खा आदि द्वारा खोले गये संगीत के विभिन्न संस्थान विदेशियों के लिए बहुमूल्य शिक्षण केन्द्र हैं। अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में 'कला' के लिए विद्यार्थियों को डिप्लोमा और डिग्री देने की भी सुविधाएँ हैं। समस्त विश्व में भारतीय कलाकारों को कला प्रस्तुति के लिए निमंत्रण दिए जाते हैं तथा वे विभिन्न उत्सव समारोहों में भाग लेते हैं।

आधुनिक भारत के प्रसिद्ध नर्तक

कथक :

- पं. बिरजु महाराज, पं. शम्भुमहाराज, सितारादेवी, पं. गोपी कृष्ण, एवं पं. लच्छू महाराज।

भरतनाट्यम :

- सरोजा वैद्यनाथन्, पद्मा सुब्रह्मण्यम्, गीता चन्द्रन।

टिप्पणी

ओडिसी :

- केलुचरण महापात्रा, संयुक्ता पाणिग्राही, किरण सहगल, माधवी मुदगल आदि।

कुचीपुड़ी :

- स्वप्न सुंदरी, सत्यनारायण शर्मा, राजा रेड्डी, राधारेड्डी और सोनल मानसिंह आदि।

संगीतविद्

- भरत, मातगंमुनि, नारदमुनि, पं. शार्ङ्गदेव, पं. सोमनाथ, पं. अहोबल।
- पं. वेंकटमखी, पं. रमामात्य, एस.एम. टैगोर और आचार्य के.सी.डी. बृहस्पति।

पिछले कुछ दशकों में नृत्य कला व नृत्यकारों के स्तर में एक परिवर्तन आया है। अब, सम्मानित परिवारों के युवक, नृत्य को व्यक्तिगत गुण के रूप में सीखने लगे हैं, जो कि उनके व्यक्तित्व को निखारती है। कुछ विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में नृत्य की शिक्षा के लिए पृथक् विभाग खोले गए हैं। अनेक शास्त्रीय नृत्य कलाकारों को पद्मश्री, पद्मभूषण आदि राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

सिन्धु घाटी सभ्यता से लेकर जहाँ नृत्यांगना की मूर्त्ति प्राप्त हुई थी, इतिहास के विभिन्न कालों से लेकर वर्तमान तक भारतीय जनता अपनी खुशी और गम विविध कलात्मक रूपों संगीत और नृत्यों के द्वारा ही प्रकट करती रही है। वे कला के द्वारा अपने प्रेम, घृणा, प्रेरणा, संघर्ष आदि भावों को अभिव्यक्त करके अन्ततः हमारी संस्कृति को ही समृद्ध बना रहे हैं।

पाठगत प्रश्न 12.3

1. भगवान शिव की नटराज आकृति क्या प्रस्तुत करती है?

   .....

2. नृत्य की दो शैलियाँ क्या हैं?

   .....

3. निम्नलिखित को मिलाएं :

नृत्य	राज्य	नृत्य	राज्य
1. बीहू	बंगाल	4. बांस नृत्य	कश्मीर
2. गरबा	मिजोरम	5. कोली	पंजाब
3. भांगड़ा और गिद्दा	महाराष्ट्र	6. धूमल	गुजरात
		7. छाऊ	आसाम

टिप्पणी

4. नृत्य की तीन सामान्य श्रेणियाँ क्या हैं?

.....

5. कत्थक के दो प्रसिद्ध नर्तकों के नाम लिखिए।

.....

6. 'भरतनाट्यम्' के कुछ प्रसिद्ध नर्तकों के नाम लिखिए।

.....

12.7 नाटक

प्राचीन परंपरा तथा आधुनिक शोध भारतीय नाटक का मूल वेदों में पाते हैं। रामायण में महिलाओं के नाटकमण्डलों का वर्णन है और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में संगीतज्ञों, नर्तकों तथा नाटकों के मंचन का वर्णन प्राप्त होता है।

नाटक प्रस्तुति कला की एक अन्य विधा है, जो अनन्त काल से चली आ रही है। शायद, नाटक बच्चों के खेलों के माध्यम से ही उत्पन्न हुआ होगा। बच्चा नकल करता है, हास्यजनक चरित्र व व्यक्तित्व को दर्शाता है और यही निश्चित रूप से नाटक का आरंभ रहा होगा।

प्राचीन काल से देवी-देवताओं के राक्षसों से युद्ध की मिथकीय कथाएं प्रचलित रही हैं। भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र लिखा और जनसाधारण के लिए 'असुर-पराजय' और 'अमृतमंथन' नामक नाटक लिखे गये नाट्यशास्त्र नाटक और दूसरी प्रस्तुति कलाओं के क्षेत्र में लिखी गई महान पुस्तक है।

महान लेखक भास ने 'उदयन' की कथा तथा रामायण और महाभारत पर आधारित नाटक लिखे। 'स्वप्नवासवदता' उनकी महान रचना थी। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में पंतजलि के महाभाष्य में नाटक के बहुत से पक्षों जैसे अभिनेता, संगीत, रंगमंच, कंसवध और बालिबन्ध जैसे नाटकों में रस का उल्लेख किया है।

नाटक के संदर्भ में भरत मुनि ने नट (पुरुष कलाकार) नटी (स्त्री कलाकार) संगीत, नृत्य, वाद्यों, संवाद, विषय, मंच आदि के बारे में लिखा है। अतः हम देखते हैं कि भरत मुनि के काल में नाटक सम्पूर्णता के स्तर तक पहुंच चुका था। भरत मुनि के अनुसार नाटक संप्रेषण का सर्वोत्तम माध्यम है इन्होंने नाटक के लिए एक चारदीवारी से युक्त क्षेत्र की भी कल्पना की थी। इन्होंने नाटक के लिऐ एक विशेष पात्र 'शैलूष' का वर्णन किया है जिनके पास व्यावसायिक नाटक कंपनियाँ होती थीं। साहसिक कहानियों का गायन को जनता में काफी लोकप्रिय हुआ जिसके फलस्वरूप ये पेशेवर कलाकार जिनको 'कुशीलव' कहा जाता था, अस्तित्व में आए।

टिप्पणी

प्रस्तुति कलाएं–संगीत, नृत्य तथा नाटक

बुद्ध और महावीर के काल में नाटक, उनके धर्म के सिद्धांतों को जनसाधारण तक पहुंचाने का माध्यम था। लघु नाटक और लंबे नाटक जन साधारण को उपदेश और शिक्षा देने के लिए आयोजित किए जाते थे। नृत्य और संगीत, नाटक के प्रभाव को बढ़ाने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।

प्राचीन काल में 10वीं शताब्दी तक शिक्षित लोगों की भाषा संस्कृत थी। अत: नाटक भी अधिकांशत: इसी भाषा में होते थे। हालांकि, जो कलाकार निम्न वर्गों और महिलाओं की भूमिका निभाते थे, उन्हें प्राकृत भाषा में संवाद बोलने पड़ते थे। कौटिल्य का अर्थशास्त्र, वात्स्यायन का कामसूत्र, कालिदास का ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' सब संस्कृत में ही लिखे गये थे। भास, दूसरे प्रसिद्ध नाटककार थे। उन्होंने 13 नाटक लिखे। प्राकृत भाषा में नाटक 10वीं शताब्दी तक काफी लोकप्रिय बन गए थे। विद्यापति 14वीं शताब्दी के महत्त्वपूर्ण नाटककार थे। उन्होंने हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को गीतों की शैली में प्रस्तुत किया था। उमापति मिश्र और शारदा तनय ने भी इस काल में नाटक को प्रोत्साहित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

नाटक के संदर्भ में दो प्रकार विकसित हुए, एक शास्त्रीय प्रकार जिसमें नाट्य कला की सभी बारीकियाँ विद्यमान थीं, और दूसरी सहज और तात्कालिक लोक नाट्य कला थी। लोक नाटकों में स्थानीय बोली का प्रयोग होता था; फलत: भिन्न-भिन्न राज्यों में अनेक प्रकार के लोकनाटक विकसित हुए। संगीत और नृत्य के संयोग के साथ नाट्य शैली लोकप्रिय थी। भिन्न-भिन्न राज्यों में लोकनाटकों के प्रकारों को अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे–

1. बंगाल– जात्रा, कीर्तनिया नाटक
2. बिहार– बिदेसिया
3. राजस्थान– रास, झूमर, ढोलामारू
4. उत्तर प्रदेश– रास, नौटंकी, स्वांग, भांड
5. गुजरात– भवाई
6. महाराष्ट्र– लाड़ित, तमाशा
7. तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक–कथकली, यक्षगान ['कुन्तलेश्वर दैत्यम्' नामक नाटक से प्रमाणित होता है कि कालिदास गुप्त काल में ही हुए थे।] ढोल, करताल, मंजीरा, खंजीरा आदि कुछ वाद्य यंत्र लोक नाटकों में प्रयुक्त होते थे।

मध्यकाल संगीत और नृत्य में समृद्ध था, किन्तु नाटक को इस काल में अधिक महत्त्व नहीं दिया गया था। बेशक, वाजिद अली शाह जैसा कला संरक्षक बादशाह, नाट्य कला के भी संरक्षक थे। वह कलाकारों को नाटकों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता था स्थानीय बोली में मंचित लोक नाटक बहुत ज्यादा लोकप्रिय थे।

अंग्रेजों के आगमन ने भारतीय समाज के चरित्र को बदल दिया। अठारहवीं शताब्दी में कलकत्ता में एक अंग्रेज द्वारा एक नाटक ग्रुप की स्थापना की गई। एक रूसी, जिसका नाम होरासिम लेबेदेव था, ने भारत में एक बंगाली थियेटर की नींव डाली, जिसको भारत में

आधुनिक भारतीय थियेटरों की शुरूआत का द्योतक माना जाता है। भारतीय नाटक को अंग्रेजी नाटक विशेष रूप से शेक्सपीयर के नाटकों ने काफी प्रभावित किया था। शिक्षित भारतीयों द्वारा विकसित मंच, पारंपरिक भारतीय खुले मंचों से भिन्न थे। मंचों के पास अब जल्दी खींचने वाले पर्दे हो गए थे तथा मंचों पर परिदृश्यों को बदला जाता था। मुंबई में स्थापित एक पारसी थियेटर कंपनी ने यह दिखाया कि थियेटर का उपयोग व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी किया जा सकता था। नाटकों में त्रासदी, हास्य और मानव जीवन की जटिलताओं को अभिनीत किया जाने लगा। नाटकों को अब विभिन्न भाषाओं में लिखा जाने लगा। साथ ही साथ, लोक नाटक जैसे जात्रा, नौटंकी, और नाच भी फलेफूले। इसी के साथ-साथ जिसने प्रदर्शन कलाओं पर प्रभाव डाला वह था–लोक नाटकों को शास्त्रीयता में ढालना। विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने अपनी कलाओं को जनसाधारण की सेवा के लिए प्रचार के माध्यम के रूप में प्रयोग किया था। नाटक के विषय में भी यही स्थिति रही। मध्यकाल में लिखे गए लोकप्रिय नाटक ''विद्यासुन्दर'' पर जात्रा का प्रभाव था। जबकि ''गीतगोविंदम्'' जिसमें महान कवि जयदेव ने कृष्ण की लीलाओं से संबंधित कहानियां को वर्णित किया, उन पर भी कीर्तनिया नाटक और जात्रा का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान में, नाटक के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किए जा रहे हैं। शम्भुमित्र, फैजल अलकाजी, बदल सरकार, विजय तेंदूलकर तथा अन्य नाटकारों के नाटकों पर पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

आजकल कई प्रकार के नाटक प्रचलित हैं जिनमें से कुछ हैं–

1. मंच थियेटर
2. रेडियो थियेटर
3. नुक्कड़ या वीथि नाटक
4. एकामिनय (एक यात्रीय प्रदर्शन)
5. संगीतमय थियेटर
6. लघु झलकियाँ
7. एकांकी नाटक

नृत्य और नाटक की विषयवस्तु के सम्बद्ध पक्षों के लिए हमें सृजनात्मक साहित्य की कृतियों का परीक्षण करना होगा। सबसे प्रमुख साहित्यिक कृति जिसने न केवल नृत्य और नाटक को ही प्रभावित किया बल्कि चित्रकला भी प्रभावित हुई, वह है 13वीं शताब्दी में जयदेव का गीतगोविन्द।

इसका प्रभाव नृत्य और नाटक पर पूरे भारत में देखा जा सकता है– पूर्व में मणिपुर और आसाम से पश्चिम में गुजरात, उत्तर में मथुरा और वृन्दावन, दक्षिण में तमिलनाडु और केरल, सम्पूर्ण देश में गीतगोविन्द पर असंख्य व्याख्याएँ प्रचलित हैं। गीत गोविन्द विषयक अनेकों पाण्डुलिपियाँ हैं जो गीतगोविन्द को नृत्य और नाटक की सामग्री के रूप में वर्णित करती हैं। यह कृति अनेक क्षेत्रीय रंगमंचीय परम्पराओं के लिए साहित्यिक पाठ्यपुस्तक के रूप में प्रयुक्त की जाती है। इस काल में वैष्णवधर्म के विस्तार ने भी विभिन्न प्रकार के नृत्य, नाटक और संगीत के विकास में पर्याप्त योगदान किया।

12.8 कुछ महत्त्वपूर्ण नाटक और उनके लेखक

नाटक एक ऐसी कला है जिसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भारत में काफी लंबी है, लेकिन इसका नाटकीय अध्ययन और विश्लेषण सहित समीक्षा भरतमुनि द्वारा नाट्य शास्त्र में प्रस्तुत की गई। इस ग्रंथ में उल्लेख किया गया है कि संगीत और नृत्य, नाटक के अनिवार्य अंग हैं। रामायण तथा महाभारत सहित कालिदास और भास द्वारा लिखे नाटक तीनों, कलाओं के संश्लेषण के महान उदाहरण है। कुछ प्रमुख नाटकों को निम्नलिखित सूची में दिया गया है।

क्रम संख्या	नाम	लेखक
1.	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	कालिदास
2.	पद्मावती	मधुसूदन
3.	नीलदेवी	भारतेंदु
4.	सत्य हरिश्चन्द्र	भारतेंदु
5.	अंधेरनगरी	भारतेंदु
6.	चंद्रावल	जयशंकरप्रसाद
7.	अजातशत्रु	जयशंकर प्रसाद
8.	राज्यश्री	जयशंकर प्रसाद
9.	चंद्रगुप्त	जयशंकर प्रसाद
12.	प्रायश्चित्त	जयशंकर प्रसाद
13.	करुणालय	जयशंकर प्रसाद
14.	भारतेंदु	जयशंकर प्रसाद

पाठगत प्रश्न 12.4

1. नाटक का आरम्भिक रूप क्या था?

   .....

2. भरतमुनि के दो नाटकों के नाम बताएं।

   .....

3. भरतमुनि के अनुसार संप्रेषण का सर्वसम्पूर्ण उचित माध्यम क्या था?

   .....

4. व्यावसायिक नाटक कम्पनी किस समुदाय की थी?

   .....

5. कुशीलव कौन थे?

   .....

6. इन दिनों किस प्रकार के विभिन्न नाटक विकसित हो रहे हैं?

.....

7. कालिदास के कोई दो नाटकों के नाम लिखें।

.....

8. ''पद्मावती'' किस ने लिखा है?

.....

9. जयशंकर प्रसाद के किन्हीं दो नाटकों के नाम लिखें।

.....

12.9 प्रस्तुति कला के स्वरूपों का वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान में, देश में कला के तीनों स्वरूप–नृत्य, संगीत तथा चित्रकला फल-फूल रहे हैं। पिछले 50 वर्षों से भी अधिक समय से 'गंधर्व महाविद्यालय' और 'प्रयाग संगीत समिति' की शाखाएं संपूर्ण भारत में शास्त्रीय संगीत एवम् नृत्य की शिक्षा के प्रसार में संलग्न हैं। अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों ने इन कलाओं को अपने पाठ्यक्रम के अंग के रूप में स्वीकार किया है। खैरागढ़ में ''इन्द्रा कला संगीत विश्वविद्यालय'', संगीत का एक विश्वविद्यालय है।

कत्थक केन्द्र, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, भारतीय कला केन्द्र तथा अनेकों संस्थाएं अपने-अपने तरीकों से संगीत का प्रचार प्रसार कर रही हैं। संगीत सभाओं, बैठकों, व्याख्यानों, प्रदर्शनों आदि का आयोजन किया जाता रहता है तथा संगीतकारों, संगीतविज्ञों, संगीत शिक्षकों और संगीत विशेषकों द्वारा संगीत तथा नाटक को लोकप्रिय बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। स्पीक-मैकेसी, संगीत नाटक अकादमी आदि संस्थाएं राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय संगीत, नृत्य तथा नाट्य कला को संरक्षित, विकसित तथा लोकप्रिय बनाने का अथक प्रयास कर रही हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगीतज्ञों का सार्थक योगदान रहा है। पं. रवि शंकर, उस्ताद अली अकबर खान तथा उस्ताद अली रखाखान आदि द्वारा शुरू की गयी विभिन्न संगीत संस्थाएं विदेशियों को भी भारतीय संगीत की शिक्षा दे रही हैं। अनेकों विदेशी विश्वविद्यालयों में भारतीय प्रस्तुतिकलाओं के विभाग खोले जा चुके हैं जहां छात्रों को डिग्रियां और डिप्लोमा दिये जा रहे हैं। अनेकों उत्सवों के अवसर पर भारतीय कलाकारों को भाग लेने तथा कलाओं के प्रदर्शन के लिए दुनिया भर में आमंत्रित किया जाने लगा है। बहुत सी सरकारी संस्थाएं जैसे आई.सी.सी.आर. (ICCR) और मानव संसाधन विकास मंत्रालय आदि निरंतर इन कलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्तियां, शोधवृत्तियां आदि, प्रबुद्ध व उदीयमान कलाकरों को देते हैं तथा संगीत, नाटक व नृत्य के क्षेत्र में विदेशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

12.10 कला की विधाएँ और मानव व्यक्तित्व का विकास

इन कला विधाओं से सम्बद्धता मनुष्यों को एक श्रेष्ठतर इंसान बनाती है। क्योंकि ये कला विधाएँ मानव आत्मा को उदात्त बनाती हैं और एक आनंददायक वातावरण का निर्माण करती हैं। इन कलाओं का ज्ञान व अभ्यास व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करता है, इन कलाओं में संलग्न व्यक्ति आत्म संतुलन, आत्म-शांति, आत्म नियंत्रण और दूसरों के लिए स्वयं में प्रेम का भाव प्राप्त कर सकता है। उनका कला-प्रदर्शन उन्हें आत्मविश्वासी, आत्मनियंत्रित और स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेने वाला बनाता है। उनमें नकारात्मक भावनाएं लुप्त हो जाती हैं, क्योंकि नृत्य, संगीत और नाटक का मूल मर्म हमें दूसरों से प्रेम करने और दूसरों की भलाई करने की शिक्षा देता है।

पाठगत प्रश्न 12.5

1. भारत सरकार के किस मंत्रालय ने प्रस्तुति कला के तीनों प्रकारों के प्रचार का कार्य किया है? नाम बताएँ।

   .....

2. प्रस्तुति कला के विकास के लिए भारत सरकार की कौन सी एजेंसी कार्य कर रही है नाम बताएँ।

   .....

3. सरकार ने प्रसिद्ध कलाकारों का किस प्रकार उत्साह बढ़ाया है?

   .....

4. प्रस्तुति कलाएँ हमारी किस प्रकार सहायक हैं?

   .....

आपने क्या सीखा

- तीन कला विधाएँ संगीत, नृत्य और नाटक भारतीय संस्कृति के अभिन्न पक्ष हैं।
- नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि के योगदान के लिए हम उनके ऋणी हैं।
- देश में कई वर्षों के राजनीतिक उथल-पुथल ने भी इन कलाओं के प्रभाव को कम नहीं किया।
- जनसाधारण और विशेषज्ञों ने कला विधाओं की शास्त्रीयता को बनाये रखने के लिए अथक प्रयास किये।

- भारतीय प्रस्तुति कलाओं को पश्चिम ने भी काफी हद तक प्रभावित किया है।
- आज भी इन कला विधाओं की देश विदेश में काफी धूम है।

पाठांत प्रश्न

1. भारत में प्रस्तुति कला के लक्ष्य तथा उद्देश्य क्या हैं?
2. भारत में प्रस्तुति कला के विकास को रेखाङ्कित कीजिए।
3. आधुनिक भारतीय संगीत में परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।
4. लोक गीतों का क्या महत्त्व है? कुछ लोक गीतों के नाम बताएं।
5. शास्त्रीय नृत्य का क्या महत्त्व है? कुछ शास्त्रीय नृत्यों के प्रकार बताएं।
6. अंग्रेजों के आगमन से नाटक में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है–स्पष्ट करें।
7. 'भारत में प्रस्तुति कलाओं के विकास की बहुत अधिक संभावना है। व्याख्या करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1 1. नृत्य, नाटक, संगीत

2. यह एक विशाल जनशिक्षा का भी स्रोत है।
3. भरत का 'नाट्य शास्त्र'। यह सम्भवत: ईसा पूर्व दूसरी सदी तथा ईसा पश्चात तीसरी सदी के बीच में संकलित हुआ।
4. मातंग की बृहद्देशी
5. बृहद्देशी
6. 264 राग
7. राधा और कृष्ण के प्रेम प्रसंग
8. शैववादी 'नयनार और वैष्णववादी 'अलवार'
9. इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय
10. उन्होंने नए रागों का विकास किया।

12.2 1. (a) उत्तर भारत का हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

(b) दक्षिण भारत का कर्नाटक संगीत

2. ध्रुपद, धमार, ठुमरी, ख्याल तथा टप्पे

टिप्पणी

3. गुरु-शिष्य परंपरा पर उनकी संगीत की एक विशेष शैली है।
4. जयपुर घराना, किराणा घराना, ग्वालियर घराना
5. मुख्य रचना
6. (a) श्याम शास्त्री
   (b) त्यागराज
   (c) मुथुस्वामी
   (d) पुरेन्दरदास
7. बांसुरी, वीणा, नादस्वरम्, मृदंगम्, घटम्
8. (a) कर्नाटक 'अलापना' हिन्दुस्तानी संगीत के 'अलाप' के समान है।
   (b) कर्नाटक संगीत का 'तिलाना' हिन्दुस्तानी संगीत के 'तराना' से मिलता है।
   (c) दोनों विधाएं 'ताल' या 'तालम्' पर जोर देती हैं।
9. (a) माण्ड–राजस्थान
   (b) भटिआली–बंगाल
10. ये साधारण गाने जीवन के हर मौके पर उत्सव मनाने में प्रयोग होते हैं।

12.3

1. सृष्टिचक्र का निर्माण और विनाश
2. नृत्य की शास्त्रीय शैली और लोक नृत्य
3. बीहू – आसाम (असम)
   गरबा – गुजरात
   भांगडा तथा गिद्दा – पंजाब
   बांस नृत्य – मिजोरम
   कोली नृत्य – महाराष्ट्र (मछुआरों का नृत्य)
   धूमल – कश्मीर
   छाऊ – बंगाल
4. (a) 'नृत्त' (पद संचालन)
   (b) 'नृत्य' (अंग संचालन)
   (c) 'नाट्य' (अभिनय)
5. पंडित बिरजू महाराज, पं. शम्भु महाराज, सितारा देवी, पं. गोपी कृष्ण तथा पं. लच्छु महाराज

6. (a) गीता चन्द्रन

   (b) डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम्

   (c) श्रीमती सरोज वैद्यनाथन्

12.4 1. बच्चा नकल करता है, उपहास करता है, व्यंग्य करता है

2. असुर–पराजय, अमृतमंथन

3. नाटक

4. शैलूष

5. साहसिक कहानियों के गायन को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना

6. (a) मंच नाटक

   (b) रेडियो नाटक

   (c) नुक्कड़ नाटक

   (d) एकल नाटक

   (e) संगीत नाटक

   (f) लघु नाटक

   (g) एकांकी नाटक

7. (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) विक्रमोर्वशीयम् (c) मालविकाग्निमित्रम्

8. मधुसूदन

9. (a) अजातशत्रु

   (b) चंद्रगुप्त

   (c) प्रायश्चित्त

   (d) करुणालय

12.5 1. मानव संसाधन तथा विकास मंत्रालय

2. (आई.सी.सी.आर.)

3. निरंतर इन कलाओं को प्रोत्साहित करने के लिए, छात्रवृत्तियाँ शोधवृत्तियां आदि देते हैं और कलाकारों का आदान प्रदान कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

4. प्रस्तुति कला हमें मस्तिष्क का सन्तुलन, स्वयं पर नियंत्रण, सभी प्राणियों से प्रेमभाव रखना सिखाती है।

   यह हमें सभी परिस्थितियों के अनुकूल तादात्म्य स्थापित करने योग्य बनाती है तथा अपने ऊपर भरोसा करने योग्य बनाती है।